

भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में बौद्ध दर्शनमानव कल्याण :, करुणा एवं समन्वय का चिंतनश्वती रानी¹DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20369571>

Review: 01/05/2026

Acceptance: 04/05/2026

Publication: 24/05/2026

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध चिंतन परंपराओं में से एक है, जिसमें मानव जीवन, प्रकृति, नैतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वित स्वरूप देखने को मिलता है। इसी परंपरा के अंतर्गत बौद्ध दर्शन का उद्भव हुआ, जिसने वैदिक चिंतन को एक नवीन व्यावहारिक दिशा प्रदान की। बौद्ध दर्शन केवल धार्मिक विचारधारा न होकर भारतीय ज्ञान परंपरा की मानवीय चेतना, नैतिक अनुशासन, सहअस्तित्व एवं करुणा का - करुणा-जीवंत प्रतिरूप है। प्रस्तुत शोध लेख में भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धांतों, मध्यम मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद तथा अहिंसाका विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह अध्ययन - आधुनिक शिक्षा, वैश्विक शांति तथा सतत विकास के संदर्भ में बौद्ध चिंतन की उपयोगिता को स्पष्ट करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, बौद्ध दर्शन, करुणा, मध्यम मार्ग, अहिंसा, प्रतीत्यसमुत्पाद, सम्यक जीवन

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जीवन को समझने और उसे संतुलित बनाने की कला है। वेद, उपनिषद, जैन एवं बौद्ध दर्शन इसी परंपरा की महत्वपूर्ण धाराएँ हैं। भारतीय चिंतन सदैव "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे मानवीय आदर्शों पर आधारित रहा है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में जब समाज कर्मकांड, सामाजिक असमानता एवं धार्मिक जटिलताओं से ग्रस्त था, तब गौतम बुद्ध ने मानवता, करुणा और तर्क पर आधारित जीवन दर्शन प्रस्तुत किया। बुद्ध का चिंतन भारतीय ज्ञान परंपरा की उस धारा-का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें अनुभव, आत्मानुशासन और नैतिकता को सर्वोच्च महत्व दिया गया है। बौद्ध दर्शन भारतीयता की उस चेतना का प्रतीक है जो मनुष्य को बाह्य आडंबरों से मुक्त कर आंतरिक शांति और सामाजिक समरसता की ओर ले जाती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वरूप अवधारणा :

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) का आधार समग्रता, आध्यात्मिकता एवं नैतिकता है। इसमें ज्ञान को केवल सूचना नहीं माना गया, बल्कि आत्मबोध और लोककल्याण का माध्यम समझा गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ-

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ केवल सैद्धांतिक अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि वे मानव जीवन को संतुलित, नैतिक एवं समन्वित बनाने का मार्ग प्रस्तुत करती हैं। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध दर्शन इन विशेषताओं को व्यावहारिक धरातल पर स्थापित करता है।

समग्र दृष्टिकोण

¹ शोधार्थिनी, नीलाम्बर पीताम्बर विहेश्वरविद्यालय, मोदी नगर, पलामू, झारखण्ड, बिहार DOI:

भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन को एक समग्र इकाई के रूप में देखती है, जहाँ शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलित विकास पर बल दिया जाता है। बौद्ध दर्शन भी मनुष्य के बाह्य और आंतरिक दोनों पक्षों के विकास को आवश्यक मानता है। बुद्ध ने केवल आध्यात्मिक मुक्ति की बात नहीं की, बल्कि सामाजिक नैतिकता, मानसिक शांति और मानवीय कल्याण को भी समान महत्व दिया। अष्टांगिक मार्ग इसी समग्र दृष्टिकोण का व्यावहारिक स्वरूप है।

आत्मानुभूति पर बल

भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान का वास्तविक स्रोत आत्मानुभूति माना गया है। बौद्ध दर्शन भी प्रत्यक्ष अनुभव और आत्मचिंतन को सर्वोच्च महत्व देता है। बुद्ध ने कहा कि किसी बात को केवल परंपरा या अंधविश्वास के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए, बल्कि स्वयं अनुभव करके सत्य को समझना चाहिए। ध्यान और विपश्यना इसी आत्मानुभूति की प्रक्रिया हैं।

प्रकृति एवं मानव का समन्वय

भारतीय चिंतन में प्रकृति को पूजनीय और जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। बौद्ध दर्शन भी प्रकृति और मानव के मध्य संतुलित संबंध की शिक्षा देता है। प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत स्पष्ट करता है कि संसार की प्रत्येक वस्तु एकदूसरे से जुड़ी हुई है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन पर्यावरण संरक्षण एवं पारिस्थितिक संतुलन की चेतना को विकसित करता है।

नैतिक जीवन

भारतीय ज्ञान परंपरा सदाचार, संयम और नैतिकता पर आधारित है। बौद्ध दर्शन में पंचशील, अष्टांगिक मार्ग तथा करुणा जैसे सिद्धांत नैतिक जीवन की आधारशिला हैं। बुद्ध के अनुसार मनुष्य का वास्तविक विकास उसके आचरण की शुद्धता में निहित है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय और संयम जैसे मूल्य बौद्ध चिंतन को नैतिक दर्शन के रूप में स्थापित करते हैं।

सहअस्तित्व एवं विश्वबंधुत्व-

भारतीय संस्कृति "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर आधारित है। बौद्ध दर्शन भी समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री और करुणा का संदेश देता है। बुद्ध ने जाति, वर्ग और ऊँचनीच का विरोध करते हुए मानव समानता को महत्व दिया। उनका "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" का सिद्धांत विश्वबंधुत्व और सामाजिक समरसता की भावना को सुदृढ़ करता है।

गुरुशिष्य परंपरा-

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु को ज्ञान का मार्गदर्शक माना गया है। बौद्ध परंपरा में भी गुरु और शिष्य के संबंध को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बुद्ध स्वयं एक महान शिक्षक थे जिन्होंने संवाद, तर्क और उदाहरणों के माध्यम से अपने शिष्यों को शिक्षित किया। बौद्ध विहार शिक्षा एवं ज्ञान के प्रमुख केंद्र बने, जहाँ अनुशासन, चिंतन और नैतिक जीवन का प्रशिक्षण दिया जाता था। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्वोंसमग्रता—, आत्मबोध, नैतिकता, सह को व्यावहारिक रूप में—अस्तित्व और मानव कल्याण-

अभिव्यक्त करता है। यही कारण है कि बौद्ध चिंतन आज भी भारतीय सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक मानव मूल्यों का महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है।

बौद्ध दर्शन इन सभी विशेषताओं को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत करता है।

बौद्ध दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा का मानवीय स्वरूप :

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि मानव जीवन को नैतिक, संतुलित और कल्याणकारी बनाना है। इस परंपरा में मानवता, सहअस्तित्व-, आत्मानुशासन तथा करुणा जैसे मूल्यों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध दर्शन इन मानवीय मूल्यों का व्यवहारिक एवं जीवनोपयोगी स्वरूप प्रस्तुत करता है। बुद्ध का चिंतन केवल आध्यात्मिक मुक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, मानसिक शांति और विश्वकल्याण की दिशा में भी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

1. करुणा का दर्शन का सर्वोच्च आदर्श मानवता :

भारतीय ज्ञान परंपरा में करुणा को मानव जीवन का सर्वोच्च गुण माना गया है। उपनिषदों से लेकर जैन एवं बौद्ध परंपरा तक सभी में दया, मैत्री और सहानुभूति को नैतिक जीवन का आधार स्वीकार किया गया है। बौद्ध दर्शन में करुणा केवल भावनात्मक संवेदना या सहानुभूति का विषय नहीं है, बल्कि यह समस्त प्राणियों के दुःख को दूर करने का सक्रिय एवं व्यावहारिक प्रयास है। बुद्ध का मानना था कि प्रत्येक प्राणी दुःख से मुक्त होकर सुख की प्राप्ति करना चाहता है। इसलिए मनुष्य का वास्तविक धर्म दूसरों के दुःख को समझना तथा उनके कल्याण के लिए कार्य करना है। यही कारण है कि बौद्ध दर्शन “बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय” की भावना को सर्वोच्च आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है। बुद्ध की करुणा केवल मानव समाज तक सीमित नहीं थी, बल्कि पशुजगत तक विस्तृत थी। यह दृष्टिकोण -पक्षियों और समस्त जीव-भारतीय ज्ञान परंपरा के उस सार्वभौमिक मानवीय स्वरूप को प्रकट करता है जिसमें समस्त सृष्टि को एक परिवार माना गया है। वर्तमान समय में जब समाज हिंसा, स्वार्थ और असहिष्णुता से प्रभावित हो रहा है, तब बौद्ध करुणा का सिद्धांत मानवता के लिए एक नैतिक मार्गदर्शक के रूप में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

2. मध्यम मार्ग संतुलित ज :ीवन का सिद्धांत

बौद्ध दर्शन का मध्यम मार्ग भारतीय ज्ञान परंपरा के संतुलनवादी दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण है। बुद्ध ने अपने जीवन के अनुभवों से यह निष्कर्ष निकाला कि न तो अत्यधिक भोगविलास मानव के लिए उचित है और न ही कठोर तपस्या। दोनों ही स्थितियाँ मनुष्य को मानसिक एवं शारीरिक असंतुलन की ओर ले जाती हैं। इसलिए उन्होंने एक ऐसे मार्ग का प्रतिपादन किया जो संयम, संतुलन और विवेक पर आधारित है।

मध्यम मार्ग का अर्थ है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन बनाए रखना। यह मार्ग मनुष्य को अतियों से – दूर रहकर संयमित एवंविवेकपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है। बौद्ध दर्शन का अष्टांगिक मार्ग इसी मध्यम मार्ग का व्यावहारिक स्वरूप है, जिसमें सम्यक दृष्टि, सम्यक विचार, सम्यक कर्म और सम्यक आजीविका जैसे तत्व शामिल हैं।

आधुनिक युग में मध्यम मार्ग की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। आज का मानव अत्यधिक भौतिकवाद, उपभोक्तावाद और प्रतिस्पर्धा के कारण मानसिक तनाव एवं असंतोष का अनुभव कर रहा है। ऐसे समय में बुद्ध का मध्यम मार्ग संतुलित जीवन, मानसिक शांति और आत्मनियंत्रण की प्रेरणा प्रदान करता है। यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि वास्तविक सुख बाहरी भौतिक साधनों में नहीं, बल्कि संतुलित और संयमित जीवन में निहित है।

3. प्रतीत्यसमुत्पाद एवं पारिस्थितिक चेतना

बौद्ध दर्शन का प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा की समन्वयवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टि को स्पष्ट करता है। इस सिद्धांत के अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु किसी न किसी कारण पर आधारित होती है तथा सभी वस्तुएँ परस्पर जुड़ी हुई हैं। कोई भी तत्व स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में नहीं रह सकता। यह विचार आधुनिक पर्यावरणीय चिंतन और पारिस्थितिक चेतना के अत्यंत निकट है। आज विश्व पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। बौद्ध दर्शन का यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि प्रकृति और मानव का संबंध परस्पर निर्भरता का है। यदि मनुष्य प्रकृति का संतुलन बिगाड़ेगा, तो उसका प्रतिकूल प्रभाव स्वयं मानव जीवन पर पड़ेगा। भारतीय ज्ञान परंपरा में नदियों, पर्वतों, वृक्षों और पृथ्वी को पूजनीय माना गया है। बौद्ध दर्शन भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और सहअस्तित्व की भावना विकसित करता है। बुद्ध का जीवन स्वयं प्रकृति के निकट रहा उन्होंने वन में तप किया, वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया और प्राकृतिक परिवेश में ही अपने उपदेश दिए। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत केवल दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास का व्यावहारिक आधार भी है।

अनात्मवाद और अहंकारविमुक्ति-

बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद भारतीय ज्ञान परंपरा की आत्मचेतना एवं आत्मसंयम की अवधारणा को एक नई दिशा प्रदान करता है। बुद्ध ने स्थायी आत्मा की धारणा को स्वीकार नहीं किया और बताया कि मनुष्य पंचस्कंधों—, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञानका समूह मात्र है।— अनात्मवाद का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को अहंकार, मोह और आसक्ति से मुक्त करना है। बुद्ध के अनुसार मनुष्य के अधिकांश दुःखों का कारण उसका अहंकार और तृष्णा है। जब मनुष्य स्वयं को श्रेष्ठ मानने लगता है, तब उसके भीतर द्वेष, हिंसा और असंतोष उत्पन्न होने लगते हैं। इसलिए बौद्ध दर्शन आत्मसंयम, विनम्रता और विवेक पर बल देता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भी “अहं ब्रह्मास्मि” का वास्तविक अर्थ आत्मबोध और आत्मचेतना है, न कि अहंकार। बौद्ध दर्शन इसी विचार को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करता है। यह मनुष्य को यह समझने की प्रेरणा देता है कि संसार परिवर्तनशील है और किसी भी वस्तु के प्रति अत्यधिक आसक्ति दुःख का कारण बनती है। वर्तमान समय में जब व्यक्ति अहंकार, भौतिक सफलता और स्वार्थ की दौड़ में मानसिक अशांति का अनुभव कर रहा है, तब बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद आत्मिक शांति और आंतरिक संतुलन का महत्वपूर्ण मार्ग प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत मानव को विनम्रता, सहिष्णुता और

आत्मनियंत्रण की शिक्षा देता है, जो एक स्वस्थ एवं समरस समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

बौद्ध दर्शन और भारतीय शिक्षा परंपरा

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मविकास था। बौद्ध शिक्षा प्रणाली इसी आदर्श पर आधारित थी। नालंदा, तक्षशिला एवं विक्रमशिला जैसे शिक्षा केंद्रों ने विश्वभर के विद्यार्थियों को आकर्षित किया। बौद्ध शिक्षा में नैतिकता, अनुशासन, संवाद पद्धति, तर्क एवं विवेक, ध्यान एवं आत्मचिंतन को विशेष महत्व दिया गया। आज नई शिक्षा नीति 2020 में भी भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मूल्यपरक शिक्षा पर बल दिया जा रहा है, जो बौद्ध चिंतन की समकालीन प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है।

समकालीन संदर्भ में बौद्ध दर्शन की उपयोगिता

वर्तमान युग विज्ञान, प्रौद्योगिकी और भौतिक प्रगति का युग माना जाता है, किन्तु इसके साथ ही मानव समाज अनेक समस्याओं—, मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट, सामाजिक असमानता तथा नैतिक पतनसे भी जूझ रहा है। आधुनिक जीवन की अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने मनुष्य को बाह्य रूप से समृद्ध, परंतु आंतरिक रूप से अशांत बना दिया है। ऐसे समय में गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध दर्शन मानव जीवन के लिए एक संतुलित, नैतिक एवं व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत करता है।

बौद्ध दर्शन केवल प्राचीन धार्मिक विचारधारा नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाज की जटिल समस्याओं के समाधान का मानवीय एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी प्रदान करता है। इसकी शिक्षाएँ आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

1. मानसिक शांति एवं तनाव मुक्ति में उपयोगिता:

आधुनिक जीवन में व्यक्ति निरंतर मानसिक तनाव, अवसाद, चिंता और असुरक्षा की भावना से ग्रस्त होता जा रहा है। अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण मानसिक स्वास्थ्य एक गंभीर समस्या बन चुका है। बौद्ध दर्शन ध्यान (Meditation) और सम्यक स्मृति (Mindfulness) के माध्यम से मनुष्य को मानसिक शांति और आत्मनियंत्रण की शिक्षा देता है। बुद्ध का मानना था कि मनुष्य का मन ही उसके सुख और दुःख का मूल कारण है। यदि मन नियंत्रित और शांत हो, तो जीवन संतुलित बन सकता है। आज विश्वभर में माइंडफुलनेस और ध्यान पद्धति को मानसिक स्वास्थ्य सुधारने के प्रभावी उपाय के रूप में अपनाया जा रहा है। अनेक मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय शोध यह सिद्ध कर चुके हैं कि ध्यान तनाव, चिंता और अवसाद को कम करने में सहायक है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन आधुनिक मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

2. अहिंसा एवं विश्वशांति की स्थापना में उपयोगिता: समकालीन विश्व युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता और हिंसा जैसी समस्याओं से प्रभावित है। मानवता आज शांति और सहमें है। बौद्ध दर्शन अस्तित्व की खोज का मूल आधार अहिंसा, करुणा और मैत्री है। बुद्ध ने यह शिक्षा दी कि घृणा का अंत घृणा से नहीं, बल्कि प्रेम और करुणा से होता है। उनका दर्शन सभी प्राणियों के प्रति दया और सहिष्णुता की भावना विकसित करता है। यही कारण है कि बौद्ध दर्शन को विश्वशांति का दर्शन भी कहा जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अनेक

अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ शांति और मानवाधिकार के संदर्भ में बौद्ध विचारों को महत्वपूर्ण मानती हैं। विश्व के अनेक देशों में बौद्ध चिंतन को सामाजिक सद्भाव और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आधारशिला के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

3. **पर्यावरण संरक्षण एवं पारिस्थितिक संतुलन में उपयोगिता:** वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने पृथ्वी के अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। बौद्ध दर्शन का प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि संसार की सभी वस्तुएँ परस्पर जुड़ी हुई हैं। मनुष्य और प्रकृति का संबंध भी परस्पर निर्भरता पर आधारित है। यदि प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है, तो मानव जीवन भी प्रभावित होता है। बुद्ध ने प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और सहअस्तित्व की भावना पर - दृष्टि सीमित उपभोग-बल दिया। बौद्ध जीवन, सादगी और संतुलित जीवन का समर्थन करती है। यही कारण है कि आधुनिक पर्यावरणीय चिंतन और सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा बौद्ध दर्शन से अत्यंत प्रभावित दिखाई देती है। आज पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में बौद्ध दर्शन मानव को प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

4. **सामाजिक समानता एवं मानवाधिकार में उपयोगिता:** आधुनिक समाज में जाति, वर्ग, लिंग और आर्थिक असमानता जैसी समस्याएँ अब भी विद्यमान हैं। बौद्ध दर्शन मानव समानता और सामाजिक न्याय का समर्थन करता है। बुद्ध ने जातिनीच का विरोध करते हुए यह प्रतिपादित किया कि म-व्यवस्था एवं ऊँच-नुष्य की श्रेष्ठता जन्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म और आचरण से निर्धारित होती है। उन्होंने स्त्रियों को भी धार्मिक जीवन में प्रवेश का अधिकार प्रदान किया, जो उस समय एक क्रांतिकारी कदम था। समकालीन लोकतांत्रिक समाज में समानता, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय की जो अवधारणाएँ विकसित हुई हैं, उनमें बौद्ध दर्शन की मानवीय चेतना का महत्वपूर्ण योगदान दिखाई देता है।

5. **नैतिक जीवन एवं मानवीय मूल्यों में उपयोगिता:** आज का समाज नैतिक संकट का सामना कर रहा है। भ्रष्टाचार, स्वार्थ, असहिष्णुता और भौतिकवाद के कारण मानवीय मूल्य कमजोर होते जा रहे हैं। बौद्ध दर्शन पंचशील, अष्टांगिक मार्ग तथा करुणा जैसे सिद्धांतों के माध्यम से नैतिक जीवन का मार्ग प्रस्तुत करता है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, संयम और सदाचार जैसे मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बुद्ध का चिंतन यह सिखाता है कि वास्तविक सुख बाहरी संपत्ति में नहीं, बल्कि नैतिकता और आत्मसंतोष में निहित है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, जहाँ बौद्ध दर्शन महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

6. **वैश्विक मानवता एवं विश्वबंधुत्व में उपयोगिता:** वैश्वीकरण के इस युग में विश्व एकदूसरे के अधिक - निकट आया है, किन्तु साथ ही सांस्कृतिक संघर्ष और असहिष्णुता की समस्याएँ भी बढ़ी हैं। बौद्ध दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत करता है।

बुद्ध का संदेश किसी एक जाति, वर्ग या राष्ट्र तक सीमित नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए था। उनका "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" का सिद्धांत आज भी विश्वबंधुत्व और वैश्विक मानवता की भावना को सुदृढ़ करता है।

समकालीन युग की जटिल समस्याओं मानसिक तनाव—, हिंसा, पर्यावरण संकट, सामाजिक असमानता एवं नैतिक पतनके समाधान में बौद्ध दर्शन अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक सिद्ध होता है। यह दर्शन मानव जीवन को — करुणा, अहिंसा, आत्मसंयम और संतुलन का मार्ग प्रदान करता है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन केवल प्राचीन भारतीय चिंतन की धरोहर नहीं, बल्कि आधुनिक विश्व के लिए भी एक मानवीय, नैतिक एवं व्यावहारिक जीवनदर्शन है—, जो वैश्विक शांति, सामाजिक समरसता और सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध दर्शन का समन्वित दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मानव जीवन का समग्र विकास करना है। इसमें ज्ञान को केवल बौद्धिक उपलब्धि न मानकर नैतिकता, आत्मबोध, सहअस्तित्व और लोककल्याण से जोड़ा गया है। गौतम बुद्ध द्वारा - प्रतिपादित बौद्ध दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के इन्हीं मूल तत्वों को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करता है। यदि भारतीय ज्ञानपरंपरा “सैद्धांतिक ज्ञान” है, तो बौद्ध दर्शन उसका “व्यावहारिक एवं नैतिक स्वरूप” है।

यदि भारतीय ज्ञान परंपरा “ज्ञान” है, तो बौद्ध दर्शन उसका “व्यवहारिक नैतिक पक्ष” है। यह मनुष्य को—

1. आत्मचिंतन)Self-Reflection): भारतीय ज्ञान परंपरा में आत्मचिंतन को ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन माना गया है। उपनिषदों में आत्मा और जीवन के सत्य को समझने पर बल दिया गया है। बौद्ध दर्शन भी मनुष्य को अपने भीतर झाँककर सत्य की खोज करने की प्रेरणा देता है।

- बुद्ध ने बाहरी आडंबरों की अपेक्षा आत्मविश्लेषण को महत्व दिया।
- ध्यान और विपश्यना आत्मचिंतन की प्रमुख विधियाँ हैं।
- आत्मचिंतन मानसिक शांति और आत्मनियंत्रण को विकसित करता है।
- यह व्यक्ति को सही और गलत का विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करता है।

आज के तनावपूर्ण जीवन में आत्मचिंतन व्यक्ति को मानसिक संतुलन और आत्मिक शांति प्रदान करता है।

2. सहिष्णुता)Tolerance)

भारतीय संस्कृति विविधता में एकता और सहिष्णुता की भावना पर आधारित है। बौद्ध दर्शन भी सभी विचारों और मतों के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण अपनाता है।

- बुद्ध ने तर्क और अनुभव के आधार पर सत्य स्वीकार करने की शिक्षा दी।
- उन्होंने धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास का विरोध किया।
- बौद्ध दर्शन संवाद और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को बढ़ावा देता है।-

- यह समाज में भाईचारा और सामाजिक समरसता स्थापित करता है।

आधुनिक बहुसांस्कृतिक समाज में सहिष्णुता सामाजिक शांति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

3. करुणा)Compassion)

करुणा बौद्ध दर्शन का मूल आधार है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भी समस्त प्राणियों के कल्याण की भावना को सर्वोच्च आदर्श माना गया है।

- बुद्ध ने “बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय” का संदेश दिया।
- करुणा केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि दूसरों के दुःख को दूर करने का प्रयास है।
- बौद्ध दर्शन सभी जीवों के प्रति दया और मैत्री की भावना विकसित करता है।
- यह हिंसा, द्वेष और असमानता को समाप्त करने में सहायक है।

आज के हिंसा और संघर्ष से प्रभावित विश्व में करुणा मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण मूल्य है।

4. विवेक)Wisdom and Rationality)

भारतीय ज्ञान परंपरा में विवेक को सत्य और असत्य के बीच अंतर करने की क्षमता माना गया है। बौद्ध दर्शन भी तर्क, अनुभव और बुद्धि पर आधारित है।

- बुद्ध ने अंधविश्वास और कर्मकांड का विरोध किया।
- उन्होंने किसी भी बात को बिना सोचेसमझे स्वीकार करने से मना किया।-
- बौद्ध दर्शन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है।
- विवेक व्यक्ति को नैतिक और संतुलित निर्णय लेने में सहायता करता है।

वर्तमान समय में विवेकपूर्ण सोच सामाजिक और व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए अत्यंत आवश्यक है।

5. संतुलित जीवन)Balanced Life)

बौद्ध दर्शन का मध्यम मार्ग भारतीय ज्ञान परंपरा के संतुलनवादी दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

- बुद्ध ने भोगविलास और कठोर तपस्या दोनों को अनुचित बताया।-
- मध्यम मार्ग संयम, अनुशासन और संतुलन पर आधारित है।
- यह व्यक्ति को मानसिक शांति और संतोष प्रदान करता है।

- संतुलित जीवन व्यक्ति को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर विकसित करता है।

आज के भौतिकवादी और तनावपूर्ण जीवन में मध्यम मार्ग अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध दर्शन का संबंध अत्यंत गहरा एवं परस्पर पूरक है। भारतीय ज्ञान परंपरा जहाँ मानव जीवन के उच्च आदर्श प्रस्तुत करती है, वहीं बौद्ध दर्शन उन्हें व्यावहारिक जीवन में लागू करने का मार्ग दिखाता है। आत्मचिंतन, सहिष्णुता, करुणा, विवेक और संतुलित जीवन जैसे मूल्य आज भी मानव समाज को नैतिक, शांतिपूर्ण और समरस दिशा प्रदान करने में सक्षम हैं।

उपसंहार

बौद्ध दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर है। यह दर्शन मानव जीवन को नैतिकता, करुणा, विवेक एवं सहअस्तित्व की दिशा प्रदान करता है। आज जब विश्व भौतिकता-, हिंसा, पर्यावरण संकट और मानसिक तनाव जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब बौद्ध चिंतन एक व्यावहारिक एवं मानवीय समाधान प्रस्तुत करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि बौद्ध दर्शन केवल अतीत की दार्शनिक विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक प्रासंगिक जीवनदर्शन है। भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्जागरण में बौद्ध दर्शन की भूमिका - अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. राधाकृष्णन, एस- . *भारतीय दर्शन*
2. राहुल सांकृत्यायन – *बौद्ध दर्शन*
3. आचार्य नरेंद्र देव – *बौद्ध धर्म दर्शन*
4. धर्मानंद कोसंबी – *भगवान बुद्ध*
5. दलाई लामा – *The Art of Happiness*
6. पालि त्रिपिटक साहित्य
7. नई शिक्षा नीति 2020
8. उपनिषद एवं भारतीय ज्ञान परंपरा संबंधी ग्रंथ।